

जय श्री गुरुदेव

1.326

ASHA ARCHIVES

ॐ नमो श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुदेव्यो नमः ॥ श्रीगुरुदेव्यो नमः ॥ श्रीगुरुदेव्यो नमः ॥
यजमानस्य श्रीर इष्टदेवताया ८ नित्य कर्म देवा चर्तय
जानिमित्यर्थेन ई अभिसेवमस्त ॥ उकारवायुविज ॥ श्री
धरा चन्दन ॥ विरेभार ॥ ॥ नानायुष्य ॥ अतस्तेनाच
मा ॥ इष्टपरमसिवसक्ति आनाथमस्तौ यथादयार्थत
आगुरुपादा मुजयुगायतोस्मि ॥ हाजल मीजोपे मंत्र ॥

त॥ जलेनाथेन नमो कृतपुजा ॥ ॐ नमो ॐ नमो
ॐ नमो ॐ कूलमातुलमाहाभैरवाय प्रका
शशक्तिसाहिताय सायुधाय सागाय स
वाहनाय सपरिवाराय सार्धपचांशकि
साहिताय नमः भर्जनमः ॥ ॐ नमो कूलपु

जा ॥ १ ॥ जलेनाथेन नमो कूलपु ॥ यजमान
स्य श्री ॐ देवताप्रित्यर्थ नित्यकर्म म
हं करिष्य ॥ ॐ नमो कूलपु ॥ जलेनाथेन नमो
तोत्तमपुत्र ॥ ॐ नमो कूलपु ॥ यजमान

तुति सीखिता ॥ ये भूता विद्वत् कला चर्त्तन स्पृष्टु ति वाग्यया
॥ ॐ पुं पञ्चदशकृतसुदसनाय नमः ॥ ॐ पुं
मूलभूमि लकनताल त्रयै ३ कोटिका दिग्बन्धनैके
र्जात ॥ दिगपूजा ॥ ॐ पुं लुं ॐ ह्रादिदलला कया
लक्षण नमः ॥ ॐ पुं ह्रं ह्रुकादिदलकै नवाय नमः ॥

ॐ पुं ह्रं असिती झदि भूवृत्तै नवाय नमः ॥ ॐ पुं भ्रं
कै चैटं तं पं यं लै व द्वा नादि भूवृत्त मातृकै भ्यो न
मः ॥ अखसैक ग्वतान ॥ ॥ थ व कं भ्रा स्त पूजा ॥ ॐ
पुं पद्मा सनाय नमः ॥ ॐ पुं कूर्मा स्नाय नमः ॥ लाह
ले ॥ व कि नि २ विद्ये त्यादि ॥ ह्ये पने तने ॥ ऐकिणि २

विद्योत्मादि॥ वकुद्वयके॥ ॐ ह्रूं ह्रूं वकुद्वयजलस्वाहा

ॐ ३२ लादिस्तनवन्धन॥ ॐ वलमकुलयादि॥ ॐ ५ गंगुल
लोनम॥ वामवाहु॥ ॐ ५ तैलनवायनम॥ ५ लबाहु॥
ॐ ५ गुलकालिखद्वययनम॥ ५ भूमोस्वद्वयनम
स्तानकवा॥ आनायामयाये॥ ५ १५ दवाचिनसादू

काये॥ नै ५४ पूमूक॥ वै ३२ नचक॥ ॥ वगिनिन्या
सयाये॥ ५ ॥ श्रीचराभारियात्पास॥ ॐ चै भूमा
महद॥ ॐ चै कानवकायनम॥ ॐ चै भूनामिका
यस्वाहा॥ ॐ चै मध्रमायवषट्॥ ॐ चै तर्जनाय
ॐ चै भूकुवकायवषट्॥ ॐ चै भूमायहृद॥ ॐ चै

दुदयायनम॥ॐ चिं न्निस स्वाहा॥ॐ चिं निखा
यवषट्॥ॐ चिं कवचाय हु॥ॐ चिं नत्रवाय वा
षट्॥ॐ चिं भूमाय हु॥ॐ चिं चतुर्वरिया
यास॥ॐ ततासिद्धि लक्ष्मि या मास॥ॐ सकल
लक्ष्मि मथनि भूमाय हु॥ॐ परमहंसिनि

भूमाय नमः॥ॐ निर्धामार्गदेवि तज्जनि
त्पीनम॥ॐ विषमोपपन्नमनिमन्ममापी
नमः॥ॐ सर्वोपदामो विकतरि कनिष्ठका
त्पीनम॥ॐ सकलसकृष्टमथनि भूमाय हु

६॥ वृत्तिक नै न्यास ॥ १॥ ॐ नमः सर्वसिद्धिदा
गिनिष्ठा दुर्दुवकाय पादुकी ॥ १॥ ॐ नमः सर्वसि
द्धिमान्त्रि ॥ १॥ पूर्ववक्तानाथ पादुकी ॥ १॥ ॐ न
मः नित्यानन्दनान्द्रि दक्षिन्तेवकाय पादुकी ॥
ॐ सकलकूलचक्रनाथिकाय उक्त नवकाय

पादुकी ॥ १॥ ॐ सगवत्सु च लुका पानित्ये पञ्चिन्व
काय पादुकी ॥ १॥ ॐ नमः सर्वसिद्धिदा गिनिष्ठा
दुर्दुविकाय पादुकी ॥ १॥ वृत्तिवक्त्र न्यास ॥ १॥
ॐ परमहंसिनि सर्वज्ञा ता ह्यदया यतम ॥ १॥ ॐ
निष्ठा नै माग्गेद वि किं किं जिन स स्वाहा ॥ १॥ ॐ

अमर

द्वितीयः खंडः

निरुद्धः खंडः

अन्तर्गतः खंडः

निर्मुक्तः खंडः

अन्तर्गतः

विश्वेश्वरः

1.326

ध्यायतपनापनालिकै विन्व ग्रासै कन म्यती॥
पूनिमापूनिताइ वा चनितासात्वतस्मृता॥
सात्ताप० नापनासात्तासूत्यातितानिर्जर्न॥
माहा० तना मयिलक्षितनभीको० द्युयूताप
म॥ यैर्कै वकादल्लभूजा त्रिपैर्कै नयनेष्टता॥

ॐ नव० श्री महादेविः महाप्रतापनिहित॥
मातृकाष्टकम० ध्यासिद्धिदागिनिवृजिता
स्वा० माराजयभावतसाधककासमास्तता॥
दौलितनास्यलक्षितना कालापूर्वकृतं जग
त॥ ७ स्वासाका सजागन चालये कुलपर्व

कचिद्वैसर्वाधिक्यं कचिन्नूनं न क्षान्ता
न ॥ कचिस्त्यजं न ॥ कचिन्त्यालं स्वतन्त्रं च
वर्तते ॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥
पिता ॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥
का ॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥

नकम् ॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥
भूपनं कन्दर्पनां दुःखतजासवपूरितं ॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥
हस्तसकमम्बमूर्धुसां लिभिसार्धकं ॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥
तूकलसं दिव्यं माहात्म्यं प्रदिपकम् ॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥
तृगिस्तनादिकितनूनागपुद्गलकं ॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥

कर्मदत्तविष्णुव्याप्यव्यवस्थिता॥ पुनर्विना
महादेविः सिद्धिलक्ष्मिजयप्रदा॥ ॐ नित्यं नमः
पूजयेत् ॥ ॐ ॥ स्वर्गार्थं ॥ श्रीसर्वनाम्नावाहृतः ॥ त्रि
देवता ॥ भावाश्चमूदा ॥ तर्पण ॥ नवान्मानिस्यं कृष्टा
ज्यैष्ठवी ॥ साक्षाद्यवलि ॥ भावाश्चमूदा लिङ्गानि ॥

तर्पण ॥ ॐ नित्यं स्वर्गार्थं पूजा ॥ ॥ जवरखपूजा ॥ श्रीसर्व
नाम्नावाहृतः त्रिदेविः आग्निभावाश्चमूदा ॥ तर्पण
ल ॥ श्रीचण्डेश्वरपूजा ॥ ॐ नमो नमो नमो नमो श्रीच
ण्डेश्वरिदेवे पादुका ॥ षडङ्ग ॥ नौद्वन्द्वयन
मा ॥ ॐ न्यादिषडङ्गपूजा ॥ वलि ॥ भासन ॥ हस्तास

नायपादकी ८॥ ॐ त्यादि॥ वृक्षा ल्यादि ८॥

पूजा॥ वलि॥ की मा नि पूजा॥ त्रैज चैकु जैमैकै
कौकिंकु काका ॥ श्री श्री की मा रि वि श्वे पादकी
त्रिधा॥ ष ३ ॥ ५५॥ वलि॥ सा द्वाय॥ तर्प्यल॥
भावाक॥ तिलिखा॥ पद्मयानि मूडा॥ तर्प्यल

ॐ निजवरवपूजा॥ ॥ दधूस पूजन॥ सिंहासना
यपा॥ महिखासनाय ३॥ लु मूसासनाय ३॥
निशुभासनाय ३॥ त्रिधा ३॥ ष ३ ना॥ वलि॥ ५ मुने
अनिपूजन॥ श्रीसम्बर्ताभावाहन॥ त्रिदवि॥
याग्नि॥ भावाक॥ मूडा तर्प्यल॥ ॥ तता जने न्वर

[illegible]

नवाय ३॥ इति श्रीकात्यायनसर्वलक्षणप्रमर्दिता
यथादुर्गा॥ त्रिषा॥ व॥ उग्रव॥ लीया॥ भ्रातृ
मूलमन्त्र॥ त्रिषा॥ व॥ उग्रव॥ लीया॥ भ्रातृ
व॥ मूलमन्त्रत्रिषा॥ वलि॥ लि॥ ग्रातृ॥ मूल
मन्त्रता॥ त्रिषा॥ व॥ उ॥ वलि॥ का॥ ग्रातृ

मूलमर्कन ॥ त्रिभ ॥ षडङ्ग ॥ वलि ॥ ॥ त्रि ॥ आस
न ॥ मूलमर्कना ॥ त्रिभ ॥ षडङ्ग ॥ वलि ॥ सि ॥ सा झा
म ॥ ॥ गिर्धानकाय गितितं ॥ नाकमहावलितापु
नकेस्वभिर्न ॥ आवाय ॥ मृदा ॥ पन ॥ लिङ्ग ॥
नेकि ॥ नानाचो ॥ अकुल ॥ यानि ॥ मृद्रीदलैयन्

नर्प्यल ॥ ॥ ततो धूपप्राश्ना ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
धूपविदुतिकानमधैलं विजलिषड ॥ धूपपूजा ॥
ॐ ॐ ॐ धूपाय नमः ॥ त्रिभ ॥ आवाय ॥ धनू ॥ यो
नि ॥ मृदा ॥ धैलपूजा ॥ ॐ ॐ नयधुनिमर्कसात
नमः साहा ॥ ॐ धिंधनैयनमः ॥ आवाय ॥